22.07.24

Page-1

Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh.

कक्षा- दसवीं

विषय- हिन्दी साहित्य

शिक्षिका- श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ-6 'दीपदान' (एकांकी) लेखक- डॉ॰ रामकुमार वर्मा

सुप्रभात प्यारे बच्चो।

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक 'एकांकी संचय' की पृष्ठ संख्या-82 पर दिए पाठ-6 'दीपदान' नामक एकांकी का अध्ययन करेंगे।

बच्चो! आज हम 'दीपदान' एकांकी के शेष भाग को पढ़ने जा रहे हैं इसलिए आप सभी अपनी-अपनी पुस्तक एवं उत्तर-पुस्तिका निकाल लें तथा पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। पाठ को पढ़ाते एवं समझाते समय आपसे कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे, जिनके उत्तर आप पाठ को ध्यानपूर्वक सुनकर ही दे पाएँगे। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

बच्चो! एकांकी को आगे पढ़ने व समझने से पहले पीछे क्या पढ़ा था, जान लेते हैं। इस एकांकी में पन्नाधाय की देशभक्ति और अनुपम त्याग का वर्णन है जिसकी मिशाल इतिहास में मुश्किल से ही मिलती है। एकांकी के आरंभ में उदयसिंह का कक्ष दिखाया गया है, जिसमें पूरी सजावट

की गई है। नेपथ्य में नारियों की सम्मिलित नृत्यध्वनि और गान सुनाई पड़ता है। उदयसिंह दौड़ता हुआ पन्ना धाय को पुकारता हुआ आता है। पन्ना आकर उन्हें अपनी तलवार रखने को कहती है। कुँवर धाय माँ से चलकर नृत्य देखने को कहते हैं। पन्ना को यह सब अच्छा नहीं लग रहा है, इसलिए वह नहीं जाती है। वे कुँवर से कहती हैं कि तुम महाराणा साँगा के छोटे कुँवर हो। सूरज की तरह तुम्हारा उदय हुआ है तभी तो तुम्हारा नाम उदयसिंह रखा गया है। तुम उनके कुल दीपक हो। कुँवर फिर पन्ना धाय से नृत्य देखने चलने को कहते हैं और फिर मना कर देने पर वह रूठ कर चले जाते हैं तथा ज़मीन पर ही सो जाते हैं उदयसिंह के जाने के बाद रावल सरूप सिंह की लड़की सोना आती है पन्ना उससे चुप रहने को कहती है क्योंकि कुँवर अभी सोए हैं। तुम लोग उन्हें नाच-गान की ओर खींचने का प्रयास मत करो। इस पर सोना कहती है कि तुलजा भवानी के सामने नाचना और दीपदान करना बुरा नहीं है। उदयसिंह को भी हमारा नाच बहुत पसंद है। सोना यह भी कहती है कि तुमने कुँवर उदयसिंह की सेवा में स्वयं को इस तरह समर्पित कर दिया है कि अब तुम्हें अपना पुत्र चंदन भी दिखाई नहीं देता। सोना बताती है कि महाराजा बनवीर ठीक ही कहते हैं कि तुम महल में अरावली पहाड़ बनकर बैठ गई हो। अतः महल पर बोझ बनने के स्थान पर तुम्हें नदी बनकर बहना चाहिए। आज कोई उत्सव न होने पर भी महाराजा बनवीर ने हमें बुलाकर नाच-गान करने और उनके बनाए मयूरपक्ष कुंड में दीपदान करने को कहा है। वह यह भी बताती है कि बनवीर की उस पर बहुत कृपा है।

बच्चो! अब एकांकी को पृष्ठ संख्या अठ्ठासी (88) से पढ़ना व समझना आरंभ करते हैं।

पन्ना सोना से कहती है कि बनवीर के अनुग्रह (कृपा) ने सोना को पागल बना दिया है जिस कारण वह सत्य भूल चुकी है और झूठी कामना करने लगी है। पन्ना की बात का उत्तर देते हुए सोना कहती है कि पागल तो सब हैं। महाराणा विक्रमादित्य (कुँवर उदय सिंह के बड़े भाई) जो अपने सात हज़ार पहलवानों के साथ केवल पहलवानी करते रहते हैं। राज्य के कार्यों की उन्हें कोई चिंता नहीं है। अतः पहलवानी का खेल ही उनका पागलपन है। महाराज बनवीर, विक्रमादित्य के अपनेपन को पाकर अपनी किस्मत पर गर्व करने लगे हैं, वे पागल हो गए हैं। वे विक्रमादित्य के अंतःपुर (स्त्रियों के रहने का स्थान) में बातचीत करते हैं। यह आनंद ही अर्थात् अंतःपुर में जा पाने की खुशी ही उनका पागलपन है। सारा नगर आज बनवीर द्वारा मनाए जा रहे इस उत्सव में पागल है। तुम कुँवर के स्नेह में अथवा उनकी रक्षा के लिए पागल हो और मैं (सोना) सबकी खुशी को देखकर पागल हुई जा रही हूँ। सारी बात करने के बाद सोना फिर पन्ना से पूछती है कि कुँवर उदय सिंह कहा हैं? सोना का मुख्य कार्य ही यही है कि वह कुँवर उदय सिंह को मयूर पक्ष कुंड तक ले जाए।

पन्ना उसे कहती है कि तुम जाओ, कुँवर उदयसिंह को छोड़ दो। तुम्हारा उल्लास अर्थात् तुम्हारा पागलपन कहीं कम न हो जाए इसलिए तुम जाओ।

सोना वाकपटु है अर्थात् बातें करने में चतुर है और हाज़िर जवाब है इसलिए वह पन्ना की इस बात का उत्तर देते हुए कहती है कि पागलपन कभी कम नहीं होता है। पहाड़ बढ़कर कभी छोटे नहीं होते हैं। नदियाँ आगे बढ़कर कभी पीछे नहीं लौटती। फूल खिलने के बाद पुनः कली का रूप नहीं बदल सकते हैं। इस प्रकार सब आगे बढ़ते हैं। यह पागलपन भी आगे बढ़ेगा। केवल तुम

आगे नहीं बढ़ती हो। सदा एक-सी रहती हो। तुम्हारा पागलपन एक समान बना हुआ है। तुममें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं है।

सोना, पन्ना को बताती है कि मैं रावल की बेटी हूँ। रावल से तरक्की होकर उसके पिता सामंत और फिर शायद महाराज बन जाएँ और मैं महाराज की बेटी बनूँ या इससे बढ़कर कुछ और ही बन जाऊँ। इस प्रकार सोना अपने भविष्य में बहुत आशाएँ लगाए बैठी है। उसे आशा है कि वह भविष्य में बहुत ऊँचाइयों तक पहुँचेगी। वह पन्ना से कहती है कि तुम केवल धाय माँ ही बनी रहोगी।

पन्ना इस बात से अधिक प्रसन्न है कि उसका जीवन राज सेवा में व्यतीत हो रहा है। उसे कुछ और नहीं चाहिए। उसे किसी से कोई ईर्ष्या नहीं है। राजसेवा में जीवन बिताना उसके भाग्य की बात है। सोना फिर कहती है कि तुम अपने भाग्य की बात कर रही हो। भाग्य तो सबके होते हैं। सोना नुपुर का उदाहरण देते हुए कहती है कि नुपुर का भाग्य है कि यह मेरे पैरों में पड़े हैं। जिस गति से मैं चलती हूँ, उसी गति में ये गीत गाते हैं और मेरे आगमन का संदेश लोगों तक पहुँचाना भी इनका भाग्य है। जब मेरे पैर शांत हो जाते हैं तो ये नुपुर मौन हो जाते हैं। यह भी इनका भाग्य है। भाग्य सबका होता है। सोना कहती है कि तुम बनवीर का साथ नहीं दे रही हो, मत दो। मैं बीच में बोलने वाली कौन होती हूँ।

पन्ना सोना की बातों से समझ जाती है कि सोना बनवीर की इच्छा से ही उसे बुलाने आई है और उदय सिंह को भी बुलाने के लिए उसे बनवीर ने ही भेजा है। सोना बात को घुमा कर कहती है कि फूल नहीं कहता कि आकर मेरी सुगंध को महसूस करो। बल्कि सुगंध तो लोगों की

नाक तक अपने-आप पहुँच जाती है। दीपक पतंगों (कीड़ों) को संदेश नहीं भेजता कि मैं जल रहा हूँ, मेरे आगे-पीछे नाचो। बल्कि पतंगे अपने आप दीपक को देखकर उसकी रोशनी के पास चले आते हैं। इसी प्रकार बनवीर ने किसी से कहा नहीं है बल्कि वे चाहते हैं कि तुम सब उत्सव में शामिल हों। लेकिन पन्ना इस उत्सव में नहीं जाना चाहती क्योंकि उसे लगता है कि वहाँ जो दीपदान हो रहा है। वह इस आग में जल जाएगी। उसकी राष्ट्रभक्ति समाप्त हो जाएगी।

सोना कुँवर को उत्सव में भेजने की बात करती है और कहती है कि उन्हें किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुँच सकता।

बच्चो ! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट के लिए रोकेंगे तथा उस दौरान पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे। प्रश्न इस प्रकार हैं :-

प्रश्न 1. सोना पन्ना को क्या करने की सलाह देती है ?

प्रश्न 2. बनवीर द्वारा आयोजित दीपदान उत्सव के संबंध में पन्ना ने सोना से क्या कहा ?

बच्चो ! विराम की अवधि अब समाप्त हो चुकी है। आशा है कि आपने उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। अब मैं उन प्रश्नों के उत्तर बताने जा रही हूँ, जो इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. सोना पन्ना धाय को राजमहल की चहारदीवारी से निकलने और बनवीर द्वारा आयोजित दीपदान उत्सव में भाग लेने की सलाह देती है।

उत्तर 2. पन्ना ने कहा कि इस त्योहार से चित्तौड़ परिचित नहीं है। यहाँ का त्योहार आत्म-बलिदान है। चित्तौड़ राग-रंग की भूमि नहीं है, जौहर की भूमि है। यहाँ आग की लपटें नाचती हैं, सोना जैसी रावल की लड़कियाँ नहीं।

बच्चो ! अब एकांकी को आगे बढ़ाते हुए विस्तार से समझना आरंभ करते हैं। सोना द्वारा कुँवर को उत्सव में भेजने की बात सुनकर पन्ना कहती हैं कि वह कुँवर को उत्सव में कैसे भेज सकती है क्योंकि महाराणा साँगा के वंश के एकमात्र उत्तराधिकारी वही तो बच गए हैं जिससे उम्मीद की जा सकती है कि वे आगे राज्य को संभाल सकें। महाराणा रत्नसिंह (महाराणा साँगा के पुत्र) जो तीन वर्ष ही राज्य करके सूर्य लोक सिधार गए अर्थात् उनकी मृत्यु हो गई। उसके बाद विक्रमादित्य जिन्हें बनवीर द्वारा चापलूसी करके इतना बिगाड़ दिया गया है कि वे राज्य को संभाल नहीं पा रहे हैं। पन्ना की इन बातों से सोना को लगता है कि वे विद्रोह की बात कर रही हैं। विद्रोह अर्थात जिसका राज्य चल रहा है उसके खिलाफ़ बगावत (विद्रोह) करना, अथवा राजद्रोह करना।

पन्ना सोना को समझाते हुए कहती है कि आँधी से आग की लपट तेज़ हो जाती है और इसी आँधी में तुम भी लड़खड़ाकर गिरोगी। जिस प्रकार दीपक की आग को हल्की सी हवा भी बुझा देती है लेकिन जंगल की आग को हवा विस्तार देती है अर्थात् बढ़ा देती है। इसी प्रकार एक दिन तुम्हारी इच्छा का पतन हो जाएगा। तुम्हारी खुशियाँ नुपुर की भाँति बिखर जाएँगी। आँधी में न जाने कौन-सा ऐसा हवा का झोंका आएगा अर्थात् ऐसा बुरा समय आएगा जो तुम्हारी खुशियों को समाप्त कर जाएगा। यह सुख-सुहाग जिसकी तुमने चर्चा की थी कि वे साथ-साथ बने हुए हैं। यह सुख-सुहाग हमेशा के लिए नहीं हैं अर्थात् इस नाच-गान से जो तुम्हें खुशी मिलेगी, यह सुख और सुहाग अर्थात् खुशी पानी के बुलबुले की तरह हैं, जो तुम्हें बिन बताए ही फूट जाएँगे। और तुम्हें पता भी नहीं चलेगा। पन्ना यह भी कहती है कि चित्तौड़ राग-रंग अर्थात् भोग-विलास (मौज-मस्ती) की भूमि

नहीं है ; जौहर की भूमि है। जौहर का अर्थ है जब चित्तौड़ की भूमि पर युद्ध होता है। उस युद्ध में यदि ऐसा लगता है कि राजा अब हार रहे हैं तो वहाँ की स्त्रियाँ अपने मान-सम्मान की रक्षा के लिए स्वयं ही आग की लपटों में भस्म हो जाती हैं। यहाँ जौहर के लिए बनाई आग की लपटें नाचती हैं, सोना जैसी शक्ल की लड़कियाँ नहीं। यहाँ की स्त्रियाँ नाचती नहीं हैं अर्थात् भोग-विलास का सामान नहीं बनती बल्कि जौहर करती हैं। पन्ना पुन: कहती है कि सोना! तुम इन नुपुरों को तोड़ दो अर्थात् अपनी तृष्णा (अप्राप्त को पाने की तीव्र इच्छा को समाप्त कर दो। तुम आग की कलियों के समान बन गई हो। जब आग जलती है तो उसके बुझने के बाद केवल राख ही बच जाती है। तुम जैसी और आग की कलियाँ (बनवीर के उत्सव में नाचने वाली स्त्रियाँ) जब बुझेंगी तो पीछे केवल काली राख ही बच जाएगी। आग है तो वह बुझेगी और उसमें केवल राख ही बचेगी। तुम्हारी कभी समाप्त न होने वाली इच्छाएँ आग के समान हैं, उनसे जो चिंगारी दूर-दूर तक फैलेगी। यह चिंगारी चित्तौड़ के लोगों की आँखों में कण बनकर गिरेगी और चुभेगी अर्थात् चित्तौड़ अपना भविष्य नहीं देख पाएगा और चित्तौड़ का भविष्य अँधेरे में चला जाएगा। यह आग की ज्वाला हवन कुंड को भी जला देगी अर्थात् चित्तौड़ में यह आग जल रही है तो यह चित्तौड़ भी तृष्णा की ज्वाला में एक दिन जल जाएगा अर्थात् समाप्त हो जाएगा। इसलिए पन्ना सोना को समझाती है कि इस तृष्णा की ज्वाला को बुझा दो। तुम्हारे इस दीपदान के त्योहार से चित्तौड़ परिचित नहीं है। चित्तौड़ का त्योहार आत्म-बलिदान है। यहाँ के लोग अपने राष्ट्र के सम्मान के लिए अपना बलिदान करते हैं। यहाँ का गीत वह नहीं है, जो तुम गा रहे हो। यहाँ के गीत में केवल मातृभूमि की वेदना की

जाती है। अतः मेरी बातों को समझो और राज्य की मर्यादा के अनुसार बनने का प्रयत्न करो।

पन्ना सोना को जाने के लिए कहती है और सचेत करती हुई कहती है कि जाकर यह पता करो कि इस त्योहार (उत्सव) के पीछे कोई कूटनीति तो नहीं है। इससे राज्य को कोई हानि तो न होगी। वह सोना से यह भी कहती है कि बनवीर से जाकर पूछना कि उसके इस रास-रंग का क्या अर्थ है? क्यों उसने बेसमय इस उत्सव को मनाने का आदेश दिया है। सोना के यह कहने पर कि यह सब मेरी समझ में नहीं आएगा, पन्ना कहती है तो फिर तुम जाओ और चारें तरफ़ बनवीर द्वारा मनाए जा रहे इस उत्सव की खुशी में खो जाओ। यह भूल जाओ कि कोई साजिश हो रही है, जो तुम्हारे राज्य को नुकसान पहुँचा सकता है। तुमसे प्रतिध्वनि भी न निकल सके अर्थात् अपनी हँसी की गूँज लोगों तक न पहुँच सके। उसे अपने भीतर ही दबाए रखना। पन्ना की इन बातों को सुनकर सोना प्रस्थान करती है अर्थात् चली जाती है। उसके नुपुर उसकी गति के अनुसार धीरे- धीरे सुनाई पड़ते हैं।

बच्चो! आज हम अपनी इस एकांकी को यहीं विराम देते हैं। आशा करती हूँ कि आपको एकांकी समझ में आ रही होगा। सभी छात्र इस एकांकी को दो - तीन बार पढ़ेंगे एवं समझेंगे। हमने एकांकी को पृष्ठ संख्या 89 (नवासी) तक पढ़ व समझ लिया है। आप स्वयं पढ़कर इसे समझने का प्रयास करें।

गृहकार्य

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो।

कक्षा - दसवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा
विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ - 6 'दीपदान')

"मैं ही क्या सारे नगर निवासी यह त्योहार मना रहे हैं, नहीं मना रही हो तो तुम ! धाय माँ तुम ! पहाड़ बनने से क्या होगा ? राजमहल पर बोझ बनकर रह जाओगी, बोझ ! और नदी बनो तो तुम्हारा बहता हुआ बोझ पत्थर भी अपने सिर पर धारण करेंगे, पत्थर भी ! आनंद और मंगल तुम्हारे किनारे होंगे, जीवन का प्रवाह होगा उमंगों की लहरें होंगी. जो उठने में गीत गाएँगी, गिरने में नाच नाचेंगी।"

प्रश्न (क) वक्ता और श्रोता कौन हैं ? नगर निवासी कौन-सा त्योहार मना रहे हैं और क्यों ?

प्रश्न (ख) उस त्योहार का आयोजन किसने, किस उद्देश्य से किया था ?

प्रश्न (ग) 'धाय माँ तुम्हारे पहाड़ बनने से क्या होगा'? वक्ता के इस कथन का क्या आशय है ?

प्रश्न (घ) और नदी बनो तो तुम्हारा बहता हुआ बोझ पत्थर भी अपने सिर पर धारण करेंगे, पत्थर भी ! आनंद और मंगल तुम्हारे किनारे होंगे उमंगों की लहरें होंगी, जो उठने में गीत गाएँगी, गिरने में नाच नाचेंगी। — कथन का आशय स्पष्ट करो।

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]